Volume-4, Issue-12, Dec-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Political Science

iz'oh mRrj izns'k ¼Qstkckn½ ds jktuhfrd nyk ds 0;fDr;k e jktuhfrd vfHkofRr vkj jktuhfrd ;kxnku dk ,d rqyukRed v/;;u

Alka Singh

षोधार्थिनी मनोविज्ञान विभाग का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या–फैजाबाद (उ0 प्र0)।

ABSTRACT इस षोध अध्ययन का उद्देष्य विभिन्न पार्टियों के नेताओं में उसकी राजनीतिक अभिवृत्ति और राजनीतिक योगदान का अध्ययन किया गया है। इसमें कुल 200 राजनीतिक कार्यकर्ताओं का फैजाबाद जनपद के विशेष सन्दर्भ में चयन किया गया है। राजनीतिक अभिवृत्ति मापनी (आइजेंक,1954) एवं राजनीतिक योगदान प्रष्नावली (स्व–निर्मित) द्वारा प्रदत्त संकलन किया गया है। राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं में उनकी राजनीति के प्रति अभिवृत्ति और राजनीति में योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

KEYWORDS : राजनीतिक दल, राजनीतिक कार्यकर्त्ता, राजनीतिक अभिवृत्ति एवं राजनीतिक योगदान।

iLrkouk& राजनीतिक दल वह है जो कि राज्य के राजनीतिक कार्यो में विरोधी विभाजन है। आधुनिक राज्य में आदर्षभूत राजनीतिक दल नागरिकों का संगठन है। एल्डर्स वेल्ड ने राजनीतिक दल के बारे में अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है कि दल एक सामाजिक समूह है, एक तंत्र है, आत्मनिर्भर क्रिया है, जिसमें समाहित है। राजनीतिक दल को लोगों के एक ऐसे संगठित समूह के रूप में समझा जा सकता है जो चुनाव लड़ने तथा सरकार के राजनीतिक सतह हासिल करने के उद्देष्य से काम करता है। समाज के सामूहिक हित को ध्यान में रख कर यह समूह कुछ नीतियों और कार्यक्रमों को तय करता हैं।

सामूहिक हित एक विवादास्पद विचार है। इसे लेकर सबकी राय अलग–अलग होती है। इसी आधार पर दल लोगों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि उनकी नीतियाँ अन्य से बेहतर हैं। वे लोगों का समर्थन पाकर चुनाव जीतने के बाद उन नीतियों को लागू करने का प्रयास करते है। इस प्रकार दल किसी समाज के बुनियादी राजनीतिक विभाजन को भी दर्षाते हैं। दल अलग–अलग नीतियों और कार्यक्रमों को मतदाताओं के सामने रखते हैं और मतदाता अपनी इच्छा या पसन्द के अनुसार नीतियों व कार्यक्रमों को चुनते हैं। देष के लिये किस प्रकार की नीति सही व उचित होगी, इस बारे में प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा भिन्न हो सकती है, लेकिन देष की कोई भी सरकार इन विभिन्न प्रकार की विचारों को एक साथ लेकर किसी भी प्रकार से चल नहीं सकती हैं। दल लोगों के विचारों के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाते है। वे समस्याओं को खोज कर सामने लाते है और फिर उन समस्याओं या मुद्दों के ऊपर बहस करते हैं। जितने भी दल होते है उनके हजारों लाखों सदस्य देष के हर कोने में फेले रहते हैं, समाज के प्रत्येक वर्ग में उनके सदस्य कार्य करते रहते है और लोगों की समस्याओं को लेकर संगोश्ठियाँ व अन्दोलन करते हैं। ये दल अपने विचारों के अनुरूप समाज के विचारों को बनाने में काफी हद तक सफल रहते है। उनके विचार समाज के चिवार बन जाते है। सरकार के नीतियों व व्यवस्था के मार्ग या दिषा देने के लिये समान या एक जैसे विचार का होना बहुत आवष्यक होता है। इन विचारों को एक साथ आगे लाना होता है और दल का यही मुख्य कार्य होता है। विचारों में समानता लाना व उन्हें एक साथ दिषा निर्देषित करना और उनका नेता या सरकार उनके इन विचारों के आधार पर अपनी नीतियों का निर्माण कर लेना है।

हमारे भारत देष में विभिन्न राजनीतिक दल हैं जिसमें देष के विभिन्न कार्यकर्त्ता प्रतिभाग करते हैं तथा उस दल के अहम् हिस्सा बनने का प्रयास करते हैं। हमारे भारत देष के निवर्तमान प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह थे, जोकि कांग्रेस पार्टी से थे, वहीं दूसरी तरफ वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भारतीय जनता पार्टी से है तथा इस पार्टी में उनके अनेक अन्य बहुत से नेताओं, राजनेताओं आदि सम्मिलित हैं। अनेक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेताओं की अभिवृत्ति अलग–अलग होती है तथा उनका योगदान भी अलग–अलग होता है। अभिवृत्ति का सम्बन्ध केवल मानवीय अभिवृत्ति से नही हैं बल्कि राजनीतिक अभिवृत्ति से है। राजनीतिक अभिवृत्ति व्यक्ति की राजनीति के प्रति धनात्मक है अथवा ऋणात्मक यह स्पश्ट करना एक जटिल कार्य है। जब राजनीतिक अभिवृत्ति हम ज्ञात कर लेते है तो उसके राजनीतिक योगदान के बारे में भी जानकारी हो जाती है। इस तरह मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जब राजनीतिक अभिवृत्ति का स्तर ज्ञात हो जाता है तो उसके योगदान के बारे में भी जानकारी मिल जाती है फलस्वरूप हम कह सकते है कि राजनीतिक अभिवृत्ति और राजनीतिक योगदान में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है।

jktuhfrd ny iz.kkyh ds fofHkUu izdkj

राजनीतिक दल प्रणाली के निम्न प्रकार है–

1– इस लोकतन्त्र में नागरिकों का कोई भी समूह कभी भी राजनीतिक दल बन सकता है। इस तरह के औपचारिक अर्थ में प्रत्येक देष में बहुत से राजनीतिक दल है। भारत में ही चुनाव आयोग में अपने दलों का नाम पंजीकृत कराने वाले दलों की संख्या 750 से ज्यादा है।

2 – प्रत्येक दल चुनाव में मजबूत चुनौती की स्थिति में नहीं होता। चुनाव में विजयी होने और अपनी सरकार बनाने की होड़ में सामान्यतः कुछ ही दल सक्रिय व आगे रहते हैं। ऐसे में यह प्रष्न सामने आता है कि लोकतंत्र की बेहतरी के लिये कितने दलों का होना सही है?

3 – कुछ देष ऐसे भी हैं जिसमें एक ही दल को सरकार बनाने की अनुभूति है। इसको एक दलीय षासन प्रणाली कहते हैं। चीन के सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी को षासन करने की अनुमति है। कानूनी रूप से वहां भी लोक राजनीतिक दल बना सकते हैं लेकिन चुनाव में उनको स्वतन्त्र प्रतिद्वन्दिता की अनुमति नहीं हैं इसीलिए वहां के लोगों को राजनीतिक दल बनाने को लाभ प्राप्त होते नही पाया जाता है। और साथ ही इसीलिये कोई नये दल का निर्माण नहीं हो पाता है।

4– हम एक दलीय षासन प्रणाली को एक सही विकल्प नहीं मान सकते हैं क्योंकि यह लोकतांत्रिक विकल्प नहीं है। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली में कम से कम दो दल होने चाहिए जिससे राजनीतिक सत्ता प्राप्ति के लिये चुनाव में दो प्रतिद्वन्दी उपस्थित हो और उन्हें प्रतिद्वन्दिता करने की अनुमति भी होनी चाहिए जिससे वे अपनी मजबूती व प्रभाविकता को साबित कर सकें। उन्हें सत्ता में आ सकने का पर्याप्त मौका भी रहना चाहिए।

5 – कुछ देषों में सत्ता दो दलों के बीच प्रायः बदलती रहती हैं। वहाँ और भी पार्टियाँ बन सकती है और साथ ही चुनाव भी लड़ सकती हैं। कुछ सीटें भी जीत सकतीं हैं लेकिन जो प्रबल दावेदारी सरकार बनाने की होती है जिसमें सिर्फ दो ही बहुमत पाने वाले दल षामिल रहते है। जैसे– अमेरिका और बिट्रेन है वहां पर दो दलीय व्यवस्था है दो ही बहुमत वाले दल सत्ता प्राप्ति के दावेदार रहते हैं।

v/;;u dk mn~ns';&– विभिन्न राजनीतिक दलों के राजनीतिक कार्यकत्ताओं के ऊपर राजनीतिक अभिवृत्ति तथा राजनीतिक योगदान के बीच सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया है।

dk;&fof/k

ifrn'k&

इसके अन्तर्गत राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं (200) का चयन फैजाबाद जनपद के सन्दर्भ में किया गया है एवं उनका चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है, जिसका प्रतिदर्ष इस प्रकार है–

तालिका संख्या 1

पार्टियाँ	सपा	भाजपा	कांग्रेस	बसपा
प्रतिदर्श	50	50	50	50

midj.k& इस षोध अध्ययन में राजनीतिक अभिवृत्ति का मापनी (आईजेंक 1954) का प्रयोग किया गया है।

2– राजनीतिक योगदान प्रष्नावली (षोधार्थिनी द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया गया है।

ifØ;k& राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं में रूचि रखने वाले व्यक्तियों पर प्रषासित किया गया एवं उनसे अपने उद्देष्य को बताया गया इस प्रकार दी गयी प्रष्नावली के आधार पर प्रतिक्रिया प्राप्त किया गया।

ifj.kke& प्रस्तुत षोध अध्ययन में प्रयोग की गयी प्रष्नावली के आधार पर विभिन्न दलों के परिप्रेक्ष्य में विष्लेशण किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार है–

तालिका संख्या–2

विभिन्न राजनीतिक दलों की सदस्यों की राजनीतिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं एफ–मूल्य की गणना

पार्टियां	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	एफ–मूल्य
सपा	47.75	1.73	
भाजपा	49.35	1.95	0.95
कांग्रेस	41.85	0.83	
बसपा	48.13	1.53	

तालिका संख्या 3

विभिन्न राजनीतिक दलों के सदस्यों का राजनीतिक योगदान का मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं एफ–मूल्य की गणना

पार्टियाँ	मध्यमान	प्रामणिक विचलन	एफ–मूल्य
सपा	9.95	0.75	
भाजपा	10.33	0.83	
कांग्रेस	10.45	0.87	0.69
बसपा	10.74	0.89	

तालिका सं0 2 से स्पश्ट होता है कि राजनीतिक अभिवृत्ति मापनी का भाजपा पार्टी का मध्यमान (44.35) एवं प्रामाणिक विलचन (1.95) अन्य पार्टियों की तुलना में सर्वाधिक है। राजनीतिक अभिवृत्ति का सबसे कम प्राप्तांक भाजपा पार्टी का है जो कि मध्यमान (48.13) एवं प्रामाणिक विचलन (1.53) है। इस प्रकार सपा पार्टी का मध्यमान (47.75) एवं प्रामाणिक विचलन (1.73) तथा बसपा का मध्यमान (41.85) एवं प्रमाणिक विचलन (1.53) प्राप्त किया गया है। इन पार्टियों के मध्यमानों एवं प्रामणिक विचलनों के मध्य प्राप्त अन्तर सार्थक नहीं है।और सभी पार्टियों के मध्य प्राप्त एफ–मूल्य 0.95 हैं।

इस प्रकार तालिका सं. 3 से स्पश्ट है कि राजनीतिक योगदान का बसपा पार्टी का मध्यमान (10.74) एवं प्रामाणिक विचलन (0.89) अन्य पार्टियों की तुलना में सर्वाधिक है। इस मापनी पर सबसे कम सपा पार्टी का मध्यमान (9.95) एवं प्रामाणिक विचलन (0.75) प्राप्त किया गया है। कांग्रेस पार्टी का मध्यमान (10.45) एवं प्रामाणिक विचलन (0.83) प्राप्त किया गया है। इन पार्टियों के मध्यमानों एवं प्रामाणिक विचलनों के मध्य प्राप्त अंतर सार्थक नहीं है। और सभी पार्टियों के मध्य प्राप्त एफ–मूल्य 0.69 है।

व्याख्या– भारत में राजनीतिक समीकरण के उत्थान की ओर बहुत ही कम ध्यान दिया गया हे। षिक्षण संस्थाओं में लोकतांत्रिक भावना के विकास और प्रसार के लिए पाठ्यक्रमों में कोई भी व्यवस्था नहीं है। सभी चाहते हैं कि देष में लोकतंत्रीय व्यवस्था और मूल्य ठीक और मजबूत हो लेकिन बध्यों में इस विचारधारा एवं भावना के विकास के लिए कोई मजबूत और प्रभावषाली प्रयास नहीं किया गया है। भारत में जनता चुनाव के दौरान ही अपने राजनीतिक लगाव को व्यक्त करती है। ये लोग अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपने मताधिकार का उपयोग करते हुए मतदान करते हैं।

REFERENCES

Anand, P.K. (1974). An Emperical Study of Attitude Towards Democracy, Unpublished Ph.D. Thesis in Banaras Hindu University (B.H.U.), Varanasi. Bhusan , L.T. (1968). A Study of Social Attitude of Political Party Members, Indian Psychological Reviews, 4, pp. 139-143. Davies, J. (1963). Human Nature in Polities, John wiley, New York. Forhener, H. (1956). Political Socialization- A study in the Psychology of Political Behaviour, New Delhi.